

प्रेस विज्ञप्ति

## जामिया में 'लैंडस्लाइड रिस्क अस्सेसमेंट एंड मिटिगेशन इन इंडिया' पर राष्ट्रीय सम्मेलन शुरू

जामिया मिल्लिया इस्लामिया में दो दिवसीय (1-2 नवंबर, 2022) 'लैंडस्लाइड रिस्क अस्सेसमेंट एंड मिटिगेशन इन इंडिया' पर राष्ट्रीय सम्मेलन आज शुरू हुआ। सम्मेलन का आयोजन भूगोल विभाग, जामिया द्वारा किया जा रहा है।

जामिया की कुलपति, प्रो. नजमा अख्तर, विश्वविद्यालय के एफटीके-सीआईटी हॉल में आयोजित उद्घाटन समारोह की मुख्य अतिथि थीं। उद्घाटन समारोह का संचालन आयोजन सचिव प्रो. लुबना सिद्दीकी ने किया।

प्रोफेसर हारून सज्जाद, अध्यक्ष, भूगोल विभाग, जामिया ने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू), दिल्ली विश्वविद्यालय, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, दिल्ली, कश्मीर विश्वविद्यालय, कुमाऊं विश्वविद्यालय, राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन संस्थान (एनआईडीएम), नई दिल्ली, भारतीय मौसम विभाग (आईएमडी), आदि सहित भारत भर के विभिन्न शैक्षणिक और अनुसंधान संस्थानों के सभी विशिष्ट अतिथियों, अधिकारियों, प्रतिनिधियों, संकाय सदस्यों और शोधकर्ताओं का गर्मजोशी से स्वागत किया। प्रोफेसर मसूद अहसान सिद्दीकी, सम्मेलन संयोजक, ने संक्षेप में दो दिवसीय सम्मेलन में उठाए जाने वाले विषयों और संभावित मुद्दों पर प्रकाश डाला।

अपने संबोधन में जामिया की कुलपति प्रो. नजमा अख्तर ने सामाजिक प्रासंगिकता और राष्ट्र निर्माण के लिए आपदा प्रबंधन और सतत विकास से संबंधित क्षेत्रों में काम करने वाले शैक्षणिक संस्थानों और कार्यक्रम / नीति कार्यान्वयन एजेंसियों के बीच अधिक सक्रिय भागीदारी का आह्वान किया। विशेष रूप से, प्रो. अख्तर ने पर्यावरणीय और सामाजिक-आर्थिक प्रभावों के साथ माउंटेन इको सिस्टम की फ्रेगिलिटी और बढ़ती आवृत्ति के साथ लैंडस्लाइड की घटना और गहन शोध और सर्वेक्षण की आवश्यकता को रेखांकित किया। उन्होंने जामिया मिल्लिया इस्लामिया की स्थापना में डॉ. जाकिर हुसैन (भारत के पूर्व राष्ट्रपति, एक महान शिक्षाविद् और जेएमआई के संस्थापक सदस्य) और महात्मा गांधी की भूमिका पर भी जोर दिया। प्रो. अख्तर ने जामिया की यात्रा पर प्रकाश डाला क्योंकि इसने हाल ही में 29 अक्टूबर 2022 को अपना 102 वां स्थापना दिवस मनाया और अधिक सामाजिक लाभ और राष्ट्र के लिए उच्च शैक्षणिक और अनुसंधान परिणामों के मंत्र के रूप में 'उत्कृष्टता की निरंतर खोज' के लिए जामिया के अनूठे प्रयास को साझा किया।

श्री कमल किशोर, सदस्य सचिव, राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, गृह मंत्रालय, भारत सरकार ने उद्घाटन समारोह में राष्ट्रीय सम्मेलन का मुख्य भाषण दिया। श्री किशोर ने जोर देकर कहा कि लैंडस्लाइड अनिवार्य रूप से स्थानीयकृत घटनाएं हैं और इससे निपटना चुनौतीपूर्ण है। भारत में लगभग 12% भौगोलिक क्षेत्र लैंडस्लाइड से ग्रस्त है, जो नॉर्वे के आकार के बराबर है। पिछले दो दशकों के दौरान, चक्रवात और गर्मी की लहरों जैसी अन्य आपदाओं की तुलना में मानव जीवन और संपत्ति के नुकसान की प्रगति धीमी रही है। श्री किशोर ने सम्मेलन के दौरान विचार-विमर्श के लिए निम्नलिखित पांच प्रमुख बिंदुओं को रेखांकित किया:

1- लैंडस्लाइड शमन एवं पुनर्वास से संबंधित निर्णायक कार्रवाई के लिए लैंडस्लाइड मानचित्रण का बेहतर उपयोग करना।

2- लैंडस्लाइड जोखिम न्यूनीकरण (एक बहु-विषयक मुद्दा) के लिए पूर्व चेतावनी प्रणालियों के लिए उपयुक्त आपदा प्रबंधन के लिए एक बहु-विषयक दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है।

3- प्रमुख राजमार्गों और बुनियादी ढांचे के विकास गलियारों में लैंडस्लाइड कम करना मुश्किल है। अकादमिक और अनुसंधान संस्थानों को प्रमुख लैंडस्लाइड की पहचान करने और पांच साल की अवधि में क्षेत्र वेधशालाओं के रूप में काम करने की आवश्यकता है। यह लैंडस्लाइड जोखिम में कमी और शमन के लिए अद्वितीय अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकता है।

4- लैंडस्लाइड की संवेदनशीलता और जोखिम में कमी की निगरानी के लिए सामुदायिक ज्ञान का उपयोग करें।

5- लैंडस्लाइड शमन के वित्तीय निहितार्थ हैं, और इसलिए, लैंडस्लाइड की संभावना वाले क्षेत्रों को इसके प्रबंधन के लिए समर्पित वित्तीय सहायता और प्रशिक्षण की आवश्यकता है।

प्रो. सिमी फरहत बशीर, डीन, प्राकृतिक विज्ञान संकाय, जामिया समारोह के विशिष्ट अतिथि थे। उन्होंने भूगोल विभाग, जामिया के योगदान की सराहना की

विशिष्ट अतिथि श्री. ताज हसन, आईपीएस (1987 बैच), कार्यकारी निदेशक, राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन संस्थान (एनआईडीएम), गृह मंत्रालय, भारत सरकार ने क्षमता निर्माण के लिए एनआईडीएम के सहयोग से विभिन्न शैक्षणिक और प्रशासनिक संगठनों द्वारा संचालित विभिन्न कार्यशालाओं के बारे में बताया। आपदा प्रबंधन से संबंधित। उन्होंने लैंडस्लाइड के वित्तीय प्रभावों पर भी प्रकाश डाला और अरुणाचल प्रदेश में आपदा न्यूनीकरण के अपने समृद्ध अनुभव को साझा किया। उन्होंने आपदा जोखिम न्यूनीकरण पर काम कर रहे सभी वैज्ञानिक समुदाय से कार्यक्रम कार्यान्वयन/प्रशासनिक एजेंसियों (जिला/उप-जिला/शहरी निकायों/ग्राम) के लिए संक्षिप्त और सटीक मानक संचालन प्रक्रियाओं (एसओपी)/कार्य बिंदुओं पर विचार का आह्वान किया। पंचायत जो जमीनी स्तर पर आपदा प्रबंधन से निपट रहे हैं। उन्होंने डीआरआर और राष्ट्र निर्माण में एनआईडीएम की भूमिका पर भी प्रकाश डाला।

प्रो. नाजिम हुसैन अल-जाफरी, रजिस्ट्रार, जेएमआई ने सभी मेहमानों और प्रतिनिधियों का स्वागत किया और दो दिवसीय सम्मेलन के दौरान एक उपयोगी वैज्ञानिक विचार-विमर्श के लिए अपनी शुभकामनाएं दीं। प्रो. मैरी ताहिर, भूगोल विभाग, जामिया ने उद्घाटन समारोह को सफल बनाने के लिए सभी विशिष्ट अतिथियों, विश्वविद्यालय के अधिकारियों, प्रतिनिधियों, संकाय सदस्यों और विद्वानों को औपचारिक धन्यवाद ज्ञापित किया।

जनसंपर्क कार्यालय

जामिया मिल्लिया इस्लामिया